अध्याय 34

याकूब और उसका परिवार शकेम में

अध्याय 34 याकूब के परिवार के साथ शकेम में हुईं कुछ दुःखद घटनाओं को बताता है। उनका आरंभ कुलपति की इकलौती पुत्री, दीना के बलात्कार से होता है (34:1-7)। इस कारण उसके भाई शकेम के पुरुषों के साथ छलपूर्ण अनुबंध करते हैं जिसके अन्तर्गत बलात्कारी उसे अपनी पत्नि के रूप में स्वीकार कर लेगा (34:8-17)। लेकिन जब शकेम निवासी भोलेपन में उनकी माँगों को पूरा कर लेते हैं (34:18-24), तब याकूब के पुत्र, अपनी बहिन के साथ हुए अपमानजनक बर्ताव के लिए शहर के लोगों का संहार कर देते हैं (34:25-31)।

दीना का बलात्कार (34:1-7)

[1]एक दिन लिआ: की बेटी दीना, जो याकूब से उत्पन्न हुई थी, उस देश की लड़कियों से भेंट करने को निकली। [2]तब उस देश के प्रधान हित्ती हमोर के पुत्र शकेम ने उसे देखा, और उसे ले जा कर उसके साथ कुकर्म कर के उसको भ्रष्ट कर डाला। [3]तब उसका मन याकूब की बेटी दीना से लग गया, और उसने उस कन्या से प्रेम की बातें की, और उस से प्रेम करने लगा। [4]अतः शकेम ने अपने पिता हमोर से कहा, "मुझे इस लड़की को मेरी पत्नी होने के लिए दिला दे।" [5]और याकूब ने सुना, कि शकेम ने मेरी बेटी दीना को अशुद्ध कर डाला है, पर उसके पुत्र उस समय पशुओं के संग मैदान में थे, सो वह उनके आने तक चुप रहा। [6]तब शकेम का पिता हमोर निकल कर याकूब से बातचीत करने के लिए उसके पास गया। [7]याकूब के पुत्र यह सुनते ही मैदान से बहुत उदास और क्रोधित हो कर आए: क्योंकि शकेम ने याकूब की बेटी के साथ कुकर्म कर के इस्राएल के घराने से मूर्खता का ऐसा काम किया था, जिसका करना अनुचित था।

आयत 1. दीना, लियाः की बेटी थी (30:21), **याकूब** की उस पत्नि की जिसे प्रेम नहीं मिला था[1], और शिमोन तथा लेवी की बहिन, जिनकी इस दुःखद घटनाक्रम में प्रमुख भूमिका है। वह याकूब की एकलौती पुत्री थी; और क्योंकि दिन भर उसके चारों ओर रहने वाले उसके ग्यारह भाई[2] थे, संभवतः इस कारण उसे नगर की कुछ युवतियों से मिलने की लालसा रहती थी। इस समय तक शायद वह तरुणास्था में थी,[3] इसलिए वह **उस देश की लड़कियों से भेंट करने को निकली**। शब्द भेंट करने (רְאֹה, *रआह)* का शब्दार्थ है "देखने" जिससे यह आभास

होता है कि दीना के अन्दर शकेम की युवतियों के व्यवहार को जानने की रुचि थी[4]।

यद्यपि दीना की यह रुचि भोलापन प्रतीत होती है, पाठक को यह विचार अवश्य आएगा कि याकूब और लिआः ने अपनी बेटी को एक अन्यजाति नगर में बिना किसी साथी के जाने देने का जोखिम क्यों उठाया। हो सकता है कि वह अपने परिवार के डेरों से बाहर, अपने माता पिता की जानकारी के बिना, जब उसके भाई बाहर मैदान में अपने झुँड और गल्लों के साथ थे, घूमती हुई चली गई। परिस्थिति चाहे जो भी रही हो, उसके इस मूर्खतापूर्ण कार्य का परिणाम उसके लिए दुःखद रहा (और शकेम के लोगों के लिए विनाशकारी)।

आयत 2. त्रासदी के लिए भूमिका तैयार करने के पश्चात, लेखक **हमोर के पुत्र शकेम से** परिचय करवाता है। "शकेम" और "हमोर" का उल्लेख इससे पिछले अध्याय में भी हुआ था जब याकूब ने भूमि का एक भाग खरीदा था (33:18, 19)। ये लोग "हित्ती" थे, कनान देश में रहने वाली सात जातियों (10:15, 17; व्यव. 7:1) में से एक। हित्ती कनान के मध्य के पहाड़ी क्षेत्र में, गिबोन तक दक्षिण में यरुशालेम के निकट और उत्तर में लेबो-हमात तक के इलाके (यहोशू 9:1-7; 11:3; न्यायियों 3:3) में रहते थे। संभवतः, शकेम का स्थापक हमोर था (देखें न्यायियों 9:28), और उसके पुत्र का नाम उस नगर के नाम से पड़ा था[5]। इस पूरे अध्याय में उनका "पिता" और "पुत्र" होने का संबंध बारंबार दोहराया गया है, जो उनके साझा कार्य और शकेम को उत्तराधिकार में मिलने वाली सामर्थ का सूचक है।

जब दीना उस देश की पुत्रियों को "देखने" *(रआह)* के लिए निकली, तो शकेम ने उसे "देखा" *(रआह)*। वासना से अभिभूत होकर, उसने उस लड़की को ले लिया (לָקַח, *लाकाच)* या "पकड़" लिया (NRSV) और बर्बस उसके साथ कुकर्म किया। "बर्बस" इब्रानी क्रिया עָנָה *(अनाह)* का अनुवाद है, जिसका अर्थ होता है "नम्र" या "बलपूर्वक आधीन" करना[6]। इस संदर्भ में इस शब्द का तात्पर्य है कि उसने उसका बलात्कार किया (CEV; NIT)[7]। उसने सोचा होगा कि इस प्रकार अकेली घूमने वाली लड़की का चरित्र भी ढीला होगा, संभवतः जैसा कुछ कनानी लड़कियों का रहा होगा। साथ ही, उस **इलाके का राजकुमार** होने के कारण, संभव है कि उसे यह अधिकार हो कि वह अपनी वासना की तृप्ति अपनी पसन्द की किसी भी स्त्री के साथ कर सके।

आयत 3. अम्मोन के विपरीत, जिसे अपनी बहिन से उसका बलात्कार करने के बाद घृणा हो गई थी (2 शमुएल 13:15-19), शकेम का **मन गहराई से दीना से लग गया**। "गहराई से लगना" דָּבַק *(दबाक)* क्रिया से आया है, जिसे 2:24 में एक पुरुष के अपनी पत्नि से "जुड़ जाने" के लिए भी प्रयोग किया गया है। ESV कहती है कि उसका "मन दीना के प्रति आकर्षित हुआ।" वह उस लड़की से प्रेम करने लगा (देखें 29:18) और उसके साथ प्रेम की बातें कीं। इब्रानी लेख का शब्दार्थ है कि "उसने लड़की के हृदय से बातें कीं।" इस प्रकार का वार्तालाप उसे सांत्वना देने का प्रयास हो सकता है (देखें रूत 2:13; यशा. 40:2), क्योंकि उसने

उसका बलात्कार किया था। भाषा के आधार पर, अधिक संभावना यह है कि उसने उससे प्रणय निवेदन किया (देखें न्यायियों 19:3; होशै 2:14), उसे अपने साथ रहने के लिए मनाने का प्रयास किया[8]। प्रतीत होता है कि वह उसके साथ रह भी गई - चाहे बलपूर्वक या स्वेच्छा से - यद्यपि लेख से यह तात्पर्य काफ़ी बाद (34:26) तक नहीं निकाला जा सकता है।

आयत 4. क्योंकि वह दीना से प्रेम करता था, **शकेम ने अपने पिता हमोर से कहा, "मुझे इस लड़की को मेरी पत्नि होने के लिए दिला दे[9]।"** उसने अपने पिता से इस बात में हस्तक्षेप करने के लिए अनुनय-विनय की क्योंकि रीति के अनुसार विवाह का प्रबन्ध करना अभिभावकों का काम था (21:21; 24:1-9; 38:6; न्यायियों 14:2)। बाद में, मूसा की व्यवस्था के अन्तर्गत, यदि कोई पुरुष किसी कुमारी से बलात्कार करे और यह बात पता चल जाए, तो उसपर बाध्य था कि वह उसके पिता को पचास शेकेल चाँदी दे और उससे विवाह करे, बिना इस संभावना के कि भविष्य में तलाक मिल सकेगा (व्यव. 22:28, 29; देखें निर्गमन 22:16, 17)।[10] चाहे उस आरंभिक काल में कनानियों में ऐसा कोई रिवाज़ ना भी रहा हो, तो भी वह जवान पुरुष ना केवल दीना से विवाह करने को तैयार था वरन याकूब को जितना भी, उसकी पुत्री के वधु होने के लिए वह चाहता, उतना मूल्य चुकाने के लिए तैयार था (34:11, 12)।

आयत 5. लेख यह खुलासा नहीं करता है कि याकूब तक यह समाचार कैसे पहुँचा कि शकेम ने **उसकी बेटी को भ्रष्ट कर दिया है**, परन्तु प्रकट है कि उसे शीघ्र ही इसका पता चल गया। स्वाभाविक है कि हम यह पढ़ने की अपेक्षा करेंगे कि कुलपति की ओर से कोई उग्र प्रतिक्रिया हुई होगी, जैसा कि दाऊद की प्रतिक्रिया थी जब उसने अपनी बेटी तामार के बलात्कार का समाचार सुना था (2 शमूएल 13:21); परन्तु **आश्चर्यजनक रीति से याकूब शान्त रहा**।[11] संभवतः उसने दीना की माता लिआः से भी उनकी बेटी के भ्रष्ट किए जाने का उल्लेख नहीं किया। याकूब का इस प्रकार से शान्त रहना उस पर सोहता नहीं है, इससे प्रतीत होता है कि उसे अपनी पुत्री के आदर की कोई परवाह नहीं थी। उसके **बेटे मवेशियों के साथ मैदान में थे**, और जब तक वे आ नहीं गए, याकूब ने किसी से कुछ नहीं कहा।

आयत 6. शकेम की इच्छानुसार, **हमोर नगर से निकल कर याकूब के पास बात करने के लिए गया**। क्रिया "निकलकर गया" (יָצָא, *यत्साह)* 34:1 से दोहराई गई है, जहाँ दीना "उस देश की लड़कियों से भेंट करने को निकली।" दीना का याकूब के डेरे से निकल कर नगर को जाना हमोर के नगर से निकल कर याकूब के डेरे को आने का कारण बना। यह कनानी पिता अपने पुत्र द्वारा किए कुकर्म के कारण कठिन परिस्थिति में था। वह कुलपति से क्या कहता?

आयत 7. दृश्य तुरंत ही **याकूब के पुत्रों की ओर, जो मैदान से** घर पहुँच रहे थे, मुड़ जाता है। लेख इसका कोई संकेत नहीं देता कि उन्हें शकेम द्वारा उनकी बहिन के साथ किए व्यवहार का कैसे पता चला। लेकिन जब उन्हें मालूम पड़ा कि क्या हुआ है, तो उनकी प्रतिक्रिया उनके पिता की निष्क्रियता और बेपरवाही

से बहुत भिन्न थी (34:5)। वे **उदास और क्रोधित थे क्योंकि उसने याकूब की बेटी को भ्रष्ट करके इस्राएल में निरादर का कार्य किया था।**

क्योंकि याकूब के समय के सैंकड़ों वर्ष बाद तक इस्राएल राष्ट्र नहीं बना, इसलिए हो सकता है कि यह कथन कि "उसने इस्राएल में निरादर का कार्य किया था" बाद में किसी प्रेर्णाप्राप्त हाथ ने लिखा हो। लेकिन कुछ लोगों का विचार है कि "इस्राएल में" का संकेत उस समय के याकूब के कुनबे से है जिससे अन्ततः इस्राएल राष्ट्र निकला। इस खण्ड को बताने का एक और तरीका है "उसने इस्राएल [याकूब] के विरोध में निरादरपूर्ण कार्य किया है," क्योंकि "में" (בְּ, *बे)* का अर्थ "विरुद्ध" भी हो सकता है[12]। फिर भी, पुराने नियम में अन्य स्थानों पर इसी प्रकार की भाषा का प्रयोग इस्राएल में किए गए ऐसे लज्जाजनक कार्यों के बारे में है (व्यव. 22:21; यहोशू 7:15; न्यायियों 20:6, 10; 2 शमूएल 13:12; यिर्म. 29:23)। चाहे जो भी दृष्टिकोण सही हो, 34:7 का कथन इस सत्य की पुष्टि है कि परमेश्वर के लोगों में ऐसा कार्य किसी को भी नहीं करना चाहिए।

शकेम के लोगों के प्रति याकूब के पुत्रों की माँग (34:8-17)

शकेम का प्रस्ताव (34:8-12)

[8]हमोर ने उन सब से कहा, "मेरे पुत्र शकेम का मन तुम्हारी बेटी पर बहुत लगा है, इसलिए उसे उसकी पत्नी होने के लिए उसको दे दो। [9]और हमारे साथ ब्याह किया करो; अपनी बेटियां हम को दिया करो, और हमारी बेटियों को आप लिया करो। [10]और हमारे संग बसे रहो: और यह देश तुम्हारे सामने पड़ा है; इस में रह कर लेन-देन करो, और इसकी भूमि को अपने लिए ले लो।" [11]और शकेम ने भी दीना के पिता और भाइयों से कहा, "यदि मुझ पर तुम लोगों की अनुग्रह की दृष्टि हो, तो जो कुछ तुम मुझ से कहो, सो मैं दूंगा। [12]तुम मुझ से कितना भी मूल्य वा बदला क्यों न माँगो, तौभी मैं तुम्हारे कहे के अनुसार दूंगा: परन्तु उस कन्या को पत्नी होने के लिए मुझे दो।"

आयत 8. हमोर ने याकूब और उसके पुत्रों को नम्रतापूर्वक संबोधित किया; परन्तु प्रत्यक्षतः, उसने कोई क्षमा नहीं माँगी, और न ही जो शकेम ने दीना के साथ किया उसका उल्लेख किया। उसने इस बात का भी कोई स्पष्टिकरण नहीं दिया कि अभी तक वह जवान लड़की नगर में उसके बेटे के घर में क्यों थी (34:26)। इसकी बजाय, उसने कहा, **"मेरे पुत्र शकेम का मन तुम्हारी बेटी पर बहुत लगा है, इसलिए उसे उसकी पत्नी होने के लिए उसको दे दो।"** जिस शब्द का अनुवाद "मन" (נֶפֶשׁ, *नपेश)* हुआ है उसके अर्थ की अनेक रंग हैं, जिनमें "जीवन," "लालसा," और "आवेश" सम्मिलित हैं। "बहुत लगा है" חָשַׁק *(चशाक)* से आया है, जिसका अर्थ है "जुड जाना" या "प्रेम।" इसका अनुवाद व्यवस्थाविवरण 21:11 में "मोहित होना" हुआ है, जो पुरुष द्वारा पत्नि प्राप्त कर

लेने की लालसा को दिखाता है। अन्य स्थान पर, यही शब्द इस्राएल के लोगों के प्रति यहोवा के "स्नेह" (व्यव. 7:7) और "प्रेम" (व्यव. 10:15) को, तथा किसी व्यक्ति के यहोवा के प्रति "स्नेह" (भजन 91:14) के लिए प्रयुक्त हुआ है। कुछ अंग्रेज़ी अनुवाद 34:8 के भाव को वर्तमान शब्दों में व्यक्त करते हैं: NLV कहती है कि शकेम का दीना पर "दिल आ गया," जबकि NLT कहती है कि वह "वास्तव में उससे प्रेम करता था।" इस प्रकार की भाषा का प्रयोग करके, हमोर कुलपति और उसके बेटों को विश्वास दिलाना चाह रहा था कि शकेम के दीना से विवाह करना चाहता था, जिससे उनका संबंध वैध हो जाए।

आयत 9. हमोर ने अपने पुत्र के दीना को पत्नि बना लेने के प्रण पर ज़ोर देते हुए शकेम के लोगों और याकूब के परिवार के मध्य एक संधि का प्रस्ताव रखा। उसने कहा **"हमारे साथ ब्याह किया करो; अपनी बेटियां हम को दिया करो, और हमारी बेटियों को आप लिया करो।"** यह बड़ा उदार प्रस्ताव प्रतीत होता है, लेकिन यह बिलकुल वही है जिसके लिए अब्राहम ने मना किया था और अपने सेवक से यह प्रतिज्ञा ली थी कि वह कनानी स्त्रियों में से उसके पुत्र इसहाक के लिए पत्नि नहीं लाएगा। वरन, उसने उसे हारान भेजा ताकि वह उसके अरामी रिश्तेदारों में से इसहाक के लिए दुल्हन लाए (24:3, 4)। इसहाक और रिबका को भी एसाव की कनानी पत्नियों से गंभीर आपत्ति थी, जिन्होंने उनके जीवन दूभर कर रखे थे। याकूब को हारान भेजने का एक कारण यह भी था कि वह अपने मामा लाबान के घर से पत्नि लाए (26:34, 35; 27:46; 28:1, 2)। जब इस्राएली वाचा के देश में प्रवेश करने की तैयारी कर रहे थे, तब परमेश्वर द्वारा उन्हें दिया गया गंभीर आदेश था कि वे कनानी स्त्रियों के साथ विवाह करने से मूर्तिपूजा में पड़ने से बचे रहें (व्यव. 7:3, 4)। यहोशू ने अपने देहांत से पहले इसी प्रकार कनानियों के साथ विवाह के विनाशकारी दुषप्रभावों के विरुद्ध चेतावनी कही थी (यहोशू 23:11-13)। इसलिए याकूब द्वारा हमोर के कनानियों के साथ विवाह संबंधों बनाने के गंभीर प्रस्ताव का कोई प्रत्युत्तर न देना वास्तव में आश्चर्यजनक बात है।

आयत 10. हमोर ने अपने पुत्र के विवाह के प्रस्ताव को याकूब तथा उसके परिवार के लिए सामाजिक एवं आर्थिक लाभ के प्रस्ताव के रूप में देखा: (1) वे चैन से बसने और **रहने** पाएंगे शकेम के लोगों के मध्य। (2) वे अपने मवेशियों के साथ बिना रोकटोक विचरने पाएंगे क्योंकि वहाँ चारागाह का बहुत सा स्थान था जो उनके लिए **खुला रहेगा**। (3) उन्हें न केवल उस इलाके में रहने की अनुमति मिल जाएगी वरन वे उसमें **व्यापार भी कर सकेंगे** और वहाँ भूमि भी ले सकेंगे[13]। हमोर का उद्देश्य इन याकूबी परदेशियों को अपने कनानी समाज में मिला लेने का था। यह याकूब और उसके घराने के लिए विनाशकारी होता, जैसा कि लूत और उसके परिवार के साथ हुआ जब वे सदोम के समाज का भाग बन जाने की कगार पर थे (19:1-38)।

आयतें 11, 12. लेख अब दिखाता है कि शकेम भी अपने पिता के साथ इस मुलाकात के लिए गया था (देखें 34:6)। जब हमोर अपनी बात कह चुका, उसका

पुत्र आगे आया और [दीना] के **पिता और भाईयों** से एक अतिरिक्त निवेदन किया। सामान्य स्थिति में कनान में रहने वाले परदेशियों को यह बड़ा उदार प्रतीत होता। शकेम ने उनसे अनुग्रह की बात कहकर विनम्रता का ढोंग किया (חֵן, *chen, चेन*, "अनुग्रह"), जो कि उसके द्वारा दीना के बलात्कार के लिए क्षमा याचना करने के सबसे निकटतम बात थी। फिर उसने उनसे कहा कि वे लड़की के लिए उसे कोई भी कीमत चुकाने के लिए कहें, इस प्रतिज्ञा के साथ कि उसके पिता और भाई, वधु के मूल्य (מֹהַר, *मोहर*[14]) के लिए तथा भेंट में (מַתָּן, *थ्थान*[15]) जो भी माँगेंगे वह देगा यदि वे उसे उसकी पत्नि होने के लिए दे दें।

भाइयों का प्रस्ताव (34:13-17)

[13]तब यह सोच कर, कि शकेम ने हमारी बहिन दीना को अशुद्ध किया है, याकूब के पुत्रों ने शकेम और उसके पिता हमोर को छल के साथ यह उत्तर दिया, [14]कि हम ऐसा काम नहीं कर सकते, कि किसी खतना रहित पुरूष को अपनी बहिन दें; क्योंकि इस से हमारी नामधराई होगी: [15]इस बात पर तो हम तुम्हारी मान लेंगे, कि हमारे समान तुम में से हर एक पुरूष का खतना किया जाए। [16]तब हम अपनी बेटियां तुम्हें ब्याह देंगे, और तुम्हारी बेटियां ब्याह लेंगे, और तुम्हारे संग बसे भी रहेंगे, और हम दोनों एक ही समुदाय के मनुष्य हो जाएंगे। [17]पर यदि तुम हमारी बात न मान कर अपना खतना न कराओगे, तो हम अपनी लड़की को लेके यहां से चले जाएंगे।

आयत 13. शकेम ने दीना से विवाह के लिए आवेश पूर्ण निवेदन किया था; परन्तु, उस जवान को उत्तर देने में अगुवाई करने की, बजाय याकूब चुप रहा। उसके **पुत्रों ने शकेम और उसके पिता हमोर को छल के साथ उत्तर दिया, क्योंकि उन्होंने उनकी बहिन दीना को अशुद्ध किया था**। लेखक यह प्रगट नहीं करता है कि याकूब के पुत्र अपने उस उत्तर के निर्णय तक कैसे पहुँचे। निःसंदेह उन्होंने यह बात अपने पिता से परामर्श किए बिना कही थी क्योंकि बाद में उसने उन्हें उनके छल, हत्या और नगर पर किए गए हमले के लिए कठोरता से डाँटा (34:30; 49:5-7)। फिर भी, इस महत्वपूर्ण समय पर याकूब का निष्क्रिय और शान्त रहना क्षमा योग्य नहीं था। एक पिता होने के कारण जिस अधिकार से उसे बोलना और अपने पुत्रों को बुद्धिमता की सम्मति देनी चाहिए थी उसकी बजाय उसने अपने अभिभावक होने के अधिकार को इन उतावले जवानों के पक्ष में त्याग दिया था।

आयतें 14-17. याकूब के पुत्र इस हित्ती के साथ अपनी बहिन के संभावित विवाह संबंध के बारे में अपने उत्तर में शकेम और हमोर को निष्कपट प्रतीत हुए। लेकिन, उन्होंने कहा कि शकेम को अपनी बहिन को पत्नि के रूप में देने में एक बाधा है: वह खतनारहित है, जो उनके लोगों में निरादर की बात है (34:14)। किसी भी संभव एकता के लिए आवश्यक है कि शकेमियों के सारे पुरुष खतना

कराने की शर्त स्वीकार कर लें (34:15); ऐसा कर लेने से, वे उनके साथ विवाह में बेटियों का आदान-प्रदान कर सकेंगे तथा एक ही समुदाय के हो जाएंगे (34:16)। "बेटियाँ" कहना हमोर द्वारा 34:9 में प्रयोग की गई भाषा को प्रतिबिंबित करता है।

उनका निर्णय दो टूक और अन्तिम था। यदि शकेम के लोग खतना करवाने के लिए सहमत नहीं होंगे, तो, भाईयों ने कहा कि, **हम अपनी लड़की को लेकर** *[लकाच]* **चले जाएंगे** (34:17)। याकूब के पुत्रों ने दीना को "अपनी लड़की" कहकर क्यों संबोधित किया? उसके बड़े भाई होने के कारण, संभवतः उन्होंने उसके जीवन में एक रक्षक के समान अपनी भूमिका देखी होगी, कुछ उसके पिता के समान।

खतने का जैसा वर्णन उन्होंने किया उसका परमेश्वर द्वारा अब्राहम और उसके वंशजों को दी गई आज्ञा से कोई संबंध नहीं था (17:9-14)। परमेश्वर ने इस प्रक्रिया को यहोवा और उसके लोगों के मध्य की वाचा के स्थाई चिन्ह के रूप में स्थापित किया था। परन्तु, याकूब के पुत्रों ने यह माँग नहीं रखी कि वे हित्ती अपने कनानी देवताओं और धार्मिक अनुष्ठानों से पलट कर यहोवा के पीछे चलें और अपने जीवन के लिए उसकी इच्छा को स्वीकार कर लें। उनका खतने की माँग रखना एक कबीले के लोगों द्वारा प्राचीन संस्कार द्वारा विवाह के संबंध तथा सामाजिक जीवन में सम्मिलित हो जाने की रीति समान था, जिससे उनके अपने किसी विश्वास पर कोई खतरा नहीं था।

शकेम के पुरुषों द्वारा भोलेपन में आज्ञापालन (34:18-24)

18उनकी इस बात पर हमोर और उसका पुत्र शकेम प्रसन्न हुए। 19और वह जवान, जो याकूब की बेटी को बहुत चाहता था, इस काम को करने में उसने विलम्ब न किया। वह तो अपने पिता के सारे घराने में अधिक प्रतिष्ठित था। 20इसलिए हमोर और उसका पुत्र शकेम अपने नगर के फाटक के निकट जा कर नगरवासियों को यों समझाने लगे; 21"वे मनुष्य तो हमारे संग मेल से रहना चाहते हैं; सो उन्हें इस देश में रह के लेनदेन करने दो; देखो, यह देश उनके लिए भी बहुत है; फिर हम लोग उनकी बेटियों को ब्याह लें, और अपनी बेटियों को उन्हें दिया करें। 22वे लोग केवल इस बात पर हमारे संग रहने और एक ही समुदाय के मनुष्य हो जाने को प्रसन्न हैं, कि उनके समान हमारे सब पुरूषों का भी खतना किया जाए। 23क्या उनकी भेड़-बकरियां, और गाय-बैल वरन उनके सारे पशु और धन सम्पत्ति हमारी न हो जाएगी? इतना ही करें कि हम लोग उनकी बात मान लें, तो वे हमारे संग रहेंगे।" 24सो जितने उस नगर के फाटक से निकलते थे, उन सभों ने हमोर की और उसके पुत्र शकेम की बात मानी; और हर एक पुरूष का खतना किया गया, जितने उस नगर के फाटक से निकलते थे।

आयत 18. याकूब के पुत्रों के **शब्द** हमोर **और शकेम को यथोचित लगे**, संभवतः भिन्न कारणों से। शकेम दीना को पत्नि के रूप में चाहता था, जबकि

हमोर याकूब के परिवार से संबंध आर्थिक कारणों से बनाना चाहता था। वास्तविकता में वह याकूब और उसके बेटों के साथ छल करके अन्ततः उनके मवेशी और धन-संपत्ति ले लेना चाहता था (34:23)।

आयत 19. यहाँ शकेम को **जवान** कहकर संबोधित किया गया है (נַעַר, *नआर)*, जो दीना के लिए प्रयुकत शब्दों (נַעֲרָה, *नआराह)* में से एक से मेल खाता है। इस शब्द का अनुवाद NASB "लड़की" करती है, जबकि ESV में "जवान स्त्री" (34:3, 12) आया है। यहाँ "जवान पुरुष" प्रयास कर रहा था कि "जवान स्त्री" उसकी पत्नि बन जाए।

एक आतुर "जवान पुरुष" के समान, शकेम ने इस काम को करने में विलंब नहीं किया **क्योंकि वह याकूब की बेटी को बहुत चाहता था**। उसने क्या कार्य (דָּבָר, *दबार)* किया? जिस इब्रानी शब्द का प्रयोग यहाँ हुआ है यह वही है जिसका अनुवाद 34:18 में "बात पर" हुआ है, यद्यपि पहली बार वह बहुवचन में प्रयुक्त हुआ है। निश्चय ही शकेम के कार्य याकूब के पुत्रों द्वारा रखी गई शर्त के अनुसार थे (34:13-17)। यह आने वाले घटनाक्रम की ओर संकेत करते हैं: वह नगर के फाटक पर गया और पुरुषों को खतना करवाने के लिए प्रोत्साहित करने लगा (34:20-24)। एक अन्य संभावना है कि यह उसके अपने खतना किए जाने का उल्लेख है, जो उसने नगर-फाटक पर जाने से पहले किया।

उल्लेख में इस स्थान पर आकर लेखक एक और बात जोड़ देता है कि **शकेम अपने पिता के सारे घराने में अधिक प्रतिष्ठित था**। यह टिप्पणी इस बात को समझाती है कि क्यों नगर के लोग उसकी बात को सुनकर उसके परामर्श का पालन करते।

आयत 20. नगर का शासक **हमोर,** और **उसका पुत्र शकेम अपने नगर के फाटक पर गए** (देखें 19:1; 23:10), अपने नगर के लोगों से इन नए आए परदेशियों द्वारा उन्हें दिए गए के प्रस्ताव के बारे में बातचीत करने के लिए। प्रकटतः पुरुषों का यह समुदाय प्राचीन नगरों में रहने वाले लोगों में से लोकप्रीय लोगों की सभा को दिखाते हैं, जो आस-पास के इलाके के ज़मींदार भी होते थे। ऐसे लोगों के समुदायों का दूसरी शताब्दी ई.पू. के मेसोपटामी एवं कनानी लेखों में अकसर उल्लेख आया है। संभवतः ये शकेम निवासी शहर के प्राचीनों के समूह से बढ़कर थे क्योंकि उनके समक्ष परदेशियों को भूमि लेने का अधिकार देने और उन्हें हित्तियों के मध्य रहने तथा अपने मवेशियों एवं गल्लों को उस इलाके के चारागाहों में चराने की अनुमति देने का मुद्दा था।[16]

आयत 21. उन दोनों पुरुषों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि वे परदेशी उनके साथ मित्रतापूर्ण संबंध चाहते थे। उन्होंने सिफ़ारिश थी कि हित्ती याकूब के लोगों को उस स्थान में रहने और व्यापार कर लेने दें, क्योंकि वह इलाका उन्हें स्थान देने के लिए काफ़ी [था]। साथ ही, दोनों समूह विवाह में बेटियों का आदान-प्रदान कर पाते।

आयत 22. फिर हमोर और शकेम ने प्रस्तुत किया उस एक **शर्त** को जिसकी माँग रखी गई थी। याकूब का परिवार हित्तियों के **संग रहने** को तभी **सहमत**

होगा जब उनके **सब पुरुष उनके समान** ही अपना भी **खतना करवा लें।** इस सारे वार्तालाप में प्रकट है कि एक बात नहीं बताई गई: शकेम और हमोर ने इस तथ्य का कोई उल्लेख नहीं किया कि शकेम ने दीना, जिसका पिता उस बड़े परिवार का मुखिया था, का बलात्कार किया था; और ना ही इस बात को स्पष्ट किया गया कि शकेमियों को पहले खतना करवाना होगा, तभी दीना के भाई उसे विवाह में शकेम को देंगे।

आयत 23. लोगों को खतना करवाने के लिए उकसाने में, हमोर और शकेम ने उनके नगर को इससे होने वाले आर्थिक लाभ पर ज़ोर दिया। उन्होंने याकूब और उसके परिवार के साथ साझा होने के अपने तर्क को इस प्रकार प्रस्तुत किया: **"क्या उनकी भेड़-बकरियां, और गाय-बैल वरन उनके सारे पशु और धन सम्पत्ति हमारी न हो जाएगी? इतना ही करें कि हम लोग उनकी बात मान लें, तो वे हमारे संग रहेंगे।"**

आयत 24. हमोर और **शकेम** ने जितने उस नगर के फाटक से निकलते थे उनके समक्ष इस प्रस्ताव को उनके लिए लाभदायक बनाकर प्रस्तुत किया। संभवतः यह मुहावरे समान वाक्यांश है जो उस **नगर के संभावित रक्षकों के लिए**, जो युद्ध के लिए जा सकते थे कहा गया था।[17] इन लोगों ने उनकी **सुनी**, और **सारे पुरुषों का खतना हुआ**। इस शल्य क्रिया के अधीन आ जाने के कारण, सारे पुरुष अस्थायी रूप से असमर्थ हो गए और नगर की रक्षा नहीं कर सके।

शकेम के पुरुषों का संहार (34:25-31)

[25]तीसरे दिन, जब वे लोग पीड़ित पड़े थे, तब ऐसा हुआ कि शिमोन और लेवी नाम याकूब के दो पुत्रों ने, जो दीना के भाई थे, अपनी अपनी तलवार ले उस नगर में निधड़क घुस कर सब पुरूषों को घात किया। [26]हमोर और उसके पुत्र शकेम को उन्होंने तलवार से मार डाला, और दीना को शकेम के घर से निकाल ले गए। [27]याकूब के पुत्रों ने घात कर डालने पर भी चढ़ कर नगर को इसलिए लूट लिया, कि उस में उनकी बहिन अशुद्ध की गई थी। [28]उन्होंने भेड़-बकरी, और गाय-बैल, और गदहे, और नगर और मैदान में जितना धन था ले लिया। [29]उस सब को, और उनके बाल-बच्चों, और स्त्रियों को भी हर ले गए, वरन घर घर में जो कुछ था, उसको भी उन्होंने लूट लिया। [30]तब याकूब ने शिमोन और लेवी से कहा, "तुम ने जो उस देश के निवासी कनानियों और परिज्जियों के मन में मेरे प्रति घृणा उत्पन्न कराई है, इस से तुम ने मुझे संकट में डाला है, क्योंकि मेरे साथ तो थोड़े की लोग हैं, सो अब वे इकट्ठे हो कर मुझ पर चढ़ेंगे, और मुझे मार डालेंगे, सो मैं अपने घराने समेत नष्ट हो जाऊंगा।" [31]उन्होंने कहा, "क्या वह हमारी बहिन के साथ वेश्या के समान बर्ताव करे?"

आयत 25. शकेम पर आक्रमण याकूब के **दो पुत्रों, शिमोन और लेवी, जो दीना के भाई थे, ने किया**। ये दोनों जवान पुरुष दीना के सगे भाई थे; तीनों ही

लिआः की सन्तान थे (29:33, 34; 30:21; 34:1)। कुछ सीमा तक यह दीना के बलात्कार के प्रति शिमोन और लेवी की बदले की प्रतिक्रिया को समझाता है।

इन दोनों भाईयों ने शकेम के पुरुषों के खतना होने के **तीसरे दिन** तक प्रतीक्षा की। जैसी की अपेक्षा की जाती है, उस समय में वे **लोग पीड़ा में थे**। एक प्राचीन यहूदी टारगम यहाँ प्रयुक्त इब्रानी भाषा की व्याख्या इस प्रकार करता है, "उनकी पीड़ा उन पर बलपूर्वक हावी थी।"[18] प्राचीन समयों में यह विशेषकर सत्य होता था, क्योंकि तब इसके लिए कीटाणु रहित औज़ार तथा सुगढ़ शल्य क्रिया के तरीके नहीं थे (देखें यहोशू 5:8)। यह भी संभव है कि ज्वर ने उन लोगों को निर्बल कर दिया हो। इस उपयुक्त समय पर, **दोनों भाईयों ने अपनी तलवारें लीं और नगर में निधड़क** [בָּטַח, *बेटाच्*] **घुसकर सब पुरुषों को घात किया**। बदले का यह कार्य अक्षम्य था; लिआः के पुत्रों ने, एक पुरुष के अपराध के लिए, नगर के सारे पुरुषों को मार डाला। कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि केवल शिमोन और लेवी के लिए, अपने ही बल पर शकेम के सभी पुरुषों को मार डालने की संभावना बहुत कम है। यदि उन्हें याकूब के अन्य पुत्रों की सहायता भी मिली थी तो भी लेख इसका कोई संकेत नहीं देता है। उनकी मृत्यु का ज़िम्मेदार केवल शिमोन और लेवी को ही माना गया है (34:30)।

आयत 26. लेखक ने **हमोर और शकेम के तलवार से मारे डालने का उल्लेख किया है**। दोनों ही पुरुष बुराई करने के दोषी थे: शकेम ने दीना को अशुद्ध किया था, और हमोर ने अपने पुत्र के अपराध को ढांपने का प्रयास किया था।

इस स्थान पर आकर दीना की स्थिति बताई गई है: वह **शकेम के घर** में थी - या तो इच्छापूर्वक या फिर बन्धुआई में[19] - बलात्कार के बाद ही से। इसलिए लिआः के पुत्रों ने अपनी बहिन को ले लिया *(लकाच्)* और निकल गए, उसे याकूब के डेरे पर लौटा दिया। यही मूल क्रिया पहले भी लेख में आई है जब शकेम ने लड़की को पकड़ लिया। उसने दीना को "ले लिया" (34:2), और अब उसके भाईयों ने उसे वापस "ले लिया।"

आयत 27. घात करने के पश्चात, लेख बताता है कि **याकूब के पुत्र नगर पर चढ़ आए और उसे लूट लिया**। उन्होंने अपने इस प्रतिशोध को कीमत चुकाना कहा क्योंकि शकेमियों ने **उनकी बहिन को अशुद्ध किया था**। भाईयों ने दीना के बलात्कार के लिए सारे नगर को ज़िम्मेदार ठहराया, इस विचार से कि शकेम के कृत्य को नज़रन्दाज़ करने के कारण वे भी उस में सहभागी थे। याकूब का चुप और निष्क्रिय रहने का भी संभवतः उनके हित्तियों के विरुद्ध इस प्रतिशोधपूर्ण कार्यवाही में सहयोग था; लेकिन बाद में उसने उनकी इस "हिंसा," "मन-मर्ज़ी," "क्रोध," और "रोष" को 49:5-7 में धिक्कारा।

आयतें 28, 29. कनानियों के विरुद्ध उनका अनियंत्रित व्यवहार ज़ारी रहा, याकूब के पुत्रों ने **उनके भेड़-बकरी, और गाय-बैल, और गदहे और नगर और मैदान में जितना धन था ले लिया।** याकूब के सभी पुत्र इस समय मृतकों को लूटने में सम्मिलित हो गए होंगे, क्योंकि उन्होंने उनका सारा धन, उनके बच्चे और उनकी स्त्रियाँ, यहाँ तक कि घरों में **जो कुछ था सब लूट लिया**।

आयतें 30, 31. इस आक्रमण के बाद, **याकूब** ने मुँह खोला और **शिमोन तथा लेवी** को उस पर संकट लाने और **उस स्थान के निवासियों में** [उसे] **घृणा का पात्र बनाने के लिए फटकारा**। "घृणा उत्पन्न करना" (בָּאַשׁ, *बआश)* या "दुर्गन्धपूर्ण बनाना" रूपकालंकार द्वारा घिनौना कार्य को दिखाता है जिस की प्रतिक्रिया स्वरूप प्रतिशोध में उस दुर्गन्ध को समूल नष्ट किया जाए (निर्गमन 5:21; 1 शमूएल 13:4; 27:12; 2 शमूएल 10:6; 16:21)।[20] याकूब ने अपने पुत्रों को **कनानियों और परिज्जियों** को उनका शत्रु बनाने का दोषी ठहराया। इस परिस्थिति में उसके तर्क "रणनीतिक और सामरिक थे, ना कि नैतिक।"[21] उसने ज़ोर देकर कहा कि उसके पुरुष, उन गिरोहों से जो अब एकत्रित होकर उन पर आक्रमण करेंगे, संख्या में कम थे। याकूब को भय था कि उसके समस्त घराने का विनाश हो जाएगा। शिमोन और लेवी का एकमात्र उत्तर था अपने हिंसक कार्य को कमज़ोर तर्क द्वारा न्यायसंगत ठहराने के लिए पूछा गया प्रश्न: **"क्या वह हमारी बहिन के साथ वेश्या के समान बर्ताव करे**?"

अनुप्रयोग

आज्ञाकारिता को टालना (अध्याय 34)

परमेश्वर के लोगों को उसकी आज्ञाकरिता करने में विलंब करने के प्रलोभन से सचेत रहना चाहिए। जब याकूब एसाव के क्रोध से बचने के लिए हारान को भाग रहा था, परमेश्वर ने उसे बेतेल में स्वपन में दर्शन दिया। उससे वायदा किया कि वह जहाँ भी जाएगा, वह उसके साथ रहेगा, उसे आशीष देगा और उसे लौटा कर उसकी जन्म-भूमि में ले आएगा। और उससे अब्राहम के साथ की गई वाचा की प्रतिज्ञाएं भी दोहराईं: उपहार में कनान देश की भूमि और बहुत से वंशज, जो पृथ्वी के सभी लोगों के लिए आशीष ठहरेंगे। इस दर्शन के प्रतिउत्तर में, याकूब ने परमेश्वर की सेवा करने की प्रतिज्ञा की। उसने बेतेल ("परमेश्वर का घर") में खंबा खड़ा किया और वायदा किया कि जो कुछ उसे मिलेगा उसका दसवाँ भाग वह परमेश्वर को देगा (28:12-22)।

लेख यह नहीं प्रगट करता है कि बेतेल में याकूब को मिले प्रभु के दर्शन के बाद कितने वर्ष बीते; लेकिन उसने हारान में बीस वर्ष बिताए, जहाँ उसकी पत्नियों और उनकी दासियों से उसके ग्यारह पुत्र और एक पुत्री जन्मे। उस समय के अन्त की ओर याकूब ने लिआः और राहेल को स्मरण कराया कि कैसे उनके घर में रहने के सारे समय में उनके पिता ने उससे झूठ बोला और छल किया। उसने अपनी पत्नियों को यह भी बताया कि परमेश्वर ने उसे दर्शन देकर वापस अपनी जन्म-भूमि को लौट जाने को कहा है (31:13), जहाँ उसका पिता अभी भी रहता है। लेकिन, लाबान के उन्हें यरदन नदी के पूर्वी किनारे पर छोड़ने के पश्चात, परमेश्वर के कहे अनुसार पार उतरकर कनान में प्रवेश करने की बजाय, प्रकटतः याकूब और उसका परिवार सुक्कोत में बस गया और कई वर्ष तक वहीं रहा। वहाँ उसने एक घर बनाया और अपने मवेशियों के लिए झोंपड़े बनाए (33:17)। जब

अन्ततः वह यरदन के पार आया और कनान में प्रवेश किया, उसने अपने परिवार के लिए शकेम में संपत्ति खरीदी (33:18-20)। अध्याय 34 में वर्णित घटनाओं के घटित होने से पूर्व वे वहाँ अवर्णित समय तक रहे।

याकूब बेतेल को या हेब्रोन के निकट अपने पिता के पास जाने से क्यों हिचकिचाता था? (1) उसे एदोम में रह रहे एसाव के निकट रहने से डर लगता था। (2) संभव है कि उसने सोचा कि अब तक तो उसके पिता का देहांत हो चुका होगा - या फिर अपने झूठ और छलावों से जो दुःख उसने उन्हें पहुँचाया था उस के कारण वह उनके सामने जाने से लज्जाता था। (3) क्योंकि उसने एसाव को मवेशियों के रूप में अपनी संपदा का एक बड़ा भाग दे दिया था (33:8-11), इसलिए बेतेल में परमेश्वर को और दसवाँ भाग देने से वह कतराता हो (देखें 28:22)। परमेश्वर की आज्ञा टालने के याकूब के जो भी कारण रहे हों, उनके परिणाम उदासी और पीड़ा देने वाले हुए।

जब लोग परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए उसकी आवाज़ को सुनते हैं, तो उसे टालना या केवल अधूरा मानना मूर्खतापूर्ण होता है। बाइबल में ऐसे प्रत्युत्तरों के अनेकों उदाहरण हैं। (1) शमूएल ने राजा शाऊल को उसकी अधूरी आज्ञाकारिता के लिए डाँटा (1 शमूएल 15:22, 23)। (2) भजनकार ने अपने समकालीन लोगों को चिताया कि वे आज्ञाकारिता को न टालें: "आज तुम उसकी बात सुनते! अपना अपना हृदय ऐसा कठोर मत करो, जैसा मरीबा में, वा मस्सा के दिन जंगल में हुआ था ..." (भजन 95:7-11)। (3) इब्रानियों के लेखक ने इस भजन को उद्धृत करके यहूदी मसीहियों प्रभु की आज्ञाकारिता में विलंब नहीं करने को उभारा (इब्रा. 3:7-4:11)। (4) सदियों पहले लिखते हुए यशायाह ने इस्राएलियों से आग्रह किया कि उनके लिए बाबुल के दासत्व से मुक्त होने का समय "प्रसन्नता का समय" ("उद्धार का समय") होगा जिसमें उन्हें पलिस्तीन को लौट कर उजाड़ पड़े हुए स्थानों को बसाना और अपने गृहस्थान को फिर से बनाना होगा (यशा. 49:8-10)। यहूदा के अधिकांश बहिष्कृत लोगों ने इसे टाल दिया, परमेश्वर की बुलाहट को अनसुना कर दिया; और वे कभी वाचा किए हुए देश में लौट कर नहीं आ सके। (5) पौलुस ने यशायाह के शब्दों को एक भिन्न रिति से प्रयोग किया: उसने मसीहियों को प्रोत्साहित किया कि वे "परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ ग्रहण न करें" और ऐसा कोई अपराध न करें जो मसीह के कार्य को कलंकित करे। उसने कुरिन्थियों से तुरंत प्रत्युत्तर देने का निवेदन करते हुए कहा, "अभी वह 'प्रसन्नता का समय है'; देखो, अभी 'उद्धार का दिन है'" (2 कुरि. 6:1-3)। (6) पौलुस ने ऐसा ही निवेदन इफिसियों से भी किया, क्योंकि परमेश्वर की सन्तान के रूप में वे अपने "चाल-चलन" में लापरवाह थे। उसने कहा कि वे नींद में चलने वालों के समान हैं और उन्हें जाग जाने और अवसर को बहुमोल जानकर अपने समय का सदुपयोग करने की आवश्यकता है क्योंकि "दिन बुरे हैं" (इफि. 5:14-16)।

मसीहियों के सामने परमेश्वर की सेवा में टालने का प्रलोभन लगातार बना रहता है। वही हमारी सहायता करे कि हम तुरंत और बुद्धिमानी से कार्य करें।

नियंत्रण से बाहर बेटे (अध्याय 34)

पिताओं को अपने बच्चों के प्रति अभिभावकों की ज़िम्मेदारी निभाने में लापरवाही करने के प्रलोभन से बचकर रहना चाहिए। याकूब की परवरिश एक गैरज़िम्मेदार परिवार में हुई थी। उसकी माँ ने उसे बिगाड़ दिया था, और उसका पिता एसाव का पक्ष लेता था। इस पक्षपात से अभिभावकों के बीच तनाव था और दोनों भाईयों के बीच कलह। याकूब ने राहेल के बच्चों (यूसुफ़ और बिन्यामीन) के प्रति पक्षपात दिखाया, जिसके कारण लिआः के बच्चों ने अपने आप को प्रेम रहित अनुभव किया होगा, जैसा कि उनकी माता ने। परिवार के अन्दर इस कलह के कारण, याकूब के दस पुत्रों ने, यूसुफ़ को बन्धुआई में बेचने से बहुत पहले से ही अपने पिता के प्रति आदर गवाँ दिया (देखें 37:3, 4; 42:4, 36-38; 43:8-16)।

यद्यपि याकूब उनके मध्य शारीरिक रूप से अनुपस्थित पिता नहीं था, यह अध्याय दिखाता है कि पिता द्वारा अगुवाई देने, शिक्षा देने, या बच्चों को अनुशासन सिखाने में वह कम ही सम्मिलित रहता था। हो सकता है कि याकूब ने दीना की शिक्षा और मार्गदर्शन की ज़िम्मेदारी लिआः को सौंपी हो; फिर भी उसको उसे सचेत करना चाहिए था कि अपनी बेटी को डेरे से बाहर अन्यजाति नगर में कभी अकेले ना जाने दे, कहीं किसी परमेश्वरहीन व्यक्ति द्वारा वह भ्रष्ट ना हो जाए।

जब याकूब ने दीना के बलात्कार की दुःखद घटना सुनी, प्रत्यक्षतः उसने उस न्यायोचित क्रोध का, जिसकी अपेक्षा एक पिता से जिसकी बेटी पर उपद्रव हुआ है की जाती है, कोई प्रदर्शन नहीं किया। वह दीना की दुर्दशा के प्रति संवेदनहीन प्रतीत होता है, और इस पूरे घटनाक्रम को लेकर आशचर्यजनक रीति से शांत। लेख यह कदापि नहीं कहता है कि उसने कोई संताप अनुभव किया, ना ही कोई ऐसा प्रमाण है कि उसने उस व्यक्ति से जिसने यह कार्य किया कोई हरजाना या उस पर दण्ड की माँग की। यह एक ऐसे पिता द्वारा, जो अपने बेटी से प्रेम करता है और उसके प्रति प्रेमपूर्ण अभिभावकीय ध्यान और नियंत्रण रखता है, आश्चर्यजनक व्यवहार था।

जब याकूब के बेटे मैदान से घर पहुँचे और जो दीना के साथ हुआ था उन्हें पता चला, तो उनकी प्रतिक्रिया याकूब की प्रतिक्रिया से अधिक स्वाभाविक थी। अपनी बहिन के साथ हुए उस "अपमानजनक कार्य" के कारण वे "बहुत क्रोधित" और "उदास" हुए (34:7)। लेकिन, थोड़ी ही देर में शकेम अपने पिता हमोर के साथ आ गया, और याकूब की एकलौती पुत्री से विवाह की अनुमति माँगने लगा। इन कनानियों ने न तो कोई क्षमा याचना की और न ही कोई स्पष्टिकरण दिया कि दीना को शकेम के घर में क्यों रखा गया है; लेकिन उसके बेटों को अचरज हुआ कि याकूब अब भी शांत रहा और कोई आपत्ति नहीं दिखाई। हमोर ने उन्हें संपत्ति और व्यापार सहित, आर्थिक लाभ का आश्वासन दिया, और जो कुछ भी वधु मोल और भेंट माँगी जाती वह दे देने का प्रस्ताव किया, लेकिन इस सारी

परिस्थिति में याकूब को बोलने के लिए किसी भी बात ने उत्तेजित नहीं किया (34:6-12)।

इस समय तक दीना के भाई अपने पिता को लेकर धैर्य खो चुके थे। वह कुछ करने की स्थिति में था, क्योंकि उसकी पुत्री का बलात्कार हुआ था, और कनानी याकूब के शांत तथा निष्क्रिय रहने को निर्बलता समझते। एक पितृप्रधान समाज में, जब उसके बेटों ने बातचीत को अपने अधिकार में ले लिया, तो हमोर और शकेम कैसे यह नहीं पहचान पाते कि याकूब ने अपने परिवार का आदर खो दिया है और अभिभावक होने का अधिकार त्याग कर अपने बेटों के हाथों कर दिया है (34:13)?

वे भाई इस जवान व्यक्ति के साथ दीना के संभावित विवाह के बारे में उन कनानी पुरुषों को उत्तर देते समय बहुत निष्ठावान प्रतीत हुए। लेकिन, उन्होंने एक बाधा बताई - खतने का मुद्दा - जो उनकी बहिन के शकेम के साथ विवाह में जुड़ने के मार्ग में खड़ी था। उन्होंने कहा कि यदि नगर के सारे पुरुषों का खतना न हो तो उनके लिए दोनों परिवारों को ऐसे संबंध में जुड जाने देना निरादर की बात होगी।

लेखक यह नहीं बताता है कि वे भाई इस निर्णय पर कब और कैसे पहुँचे। संभवतः उन्हें पूर्वाभास था कि उनका पिता कनानियों के विरुद्ध खड़ा नहीं होगा और न ही बलात्कारी के लिए किसी दण्ड की माँग करेगा; इसलिए, यदि ऐसा हुआ, तो संभव है कि उन्होंने अपने पिता या कनानियों से मिलने से पहले ही हिंसक प्रतिक्रिया की योजना बना ली। हत्याओं में छोटे बेटों के सम्मिलित होने का उल्लेख नहीं है; परन्तु संभव है कि बाद में उन्होंने स्त्रियों, बच्चों, सेवकों, और मवेशियों को एकत्रित करने में हाथ बंटाया हो। उनके कार्यविधि का जो भी विस्तृत वर्णन रहा हो, याकूब के बेटों को उसके क्रोध का कोई भय नहीं था। उनका व्यवहार इस बात का प्रमाण है कि वर्ष बीतने के साथ याकूब का कोई भी प्रभावी अभिभावकीय नियंत्रण उन पर नहीं रहा था।

ऐसी ही तुलनात्मक त्रासदियाँ उन अन्य ईश्वरीय पुरुषों के साथ भी हुईं जिन्होंने अभिभावकीय नियंत्रण का निर्वाह नहीं किया:

1. एली के बेटों ने "परमेश्वर की भेंटों को तुच्छ जाना" और जो महिलाएं मिलापवाले तंबू में सेवा करती थीं उनके साथ वे कुकर्म करते थे। उनका पिता, एक वृद्ध याजक, जानता था कि उसके पुत्र क्या कर रहे हैं और वह उन्हें डाँटता था; लेकिन उनके ऊपर वह अपना अभिभावक होने का अधिकार और नियंत्रण खो चुका था। वे उसकी नहीं सुनते थे (1 शमूएल 2:12-25)। उन पुत्रों के हठीले रवैये और कार्यों के कारण इस्राएल को युद्ध में पराजय, वाचा के सन्दूक के हानि और एली और उसके पुत्रों की तथा एक बहू की मृत्यु मिली (1 शमूएल 4:1-22)।

2. दाऊद से एक और दुःखद उदाहरण है उसके ऐसा पिता होने का जिसने अपने पुत्रों को अनुशासित नहीं किया और उन पर नियंत्रण खो दिया। उसके अनेकों पत्नियाँ और बच्चे थे, और उसके उन पापमय कार्यों में जिनके कारण उसके पुत्रों का उसके प्रति आदर घटा, बतशेबा से संबंधित कार्य भी थे। सर्वप्रथम, राजा

ने उसके साथ व्यभिचार किया, और वह गर्भवती हो गई। फिर, अपने पाप को छुपाने के प्रयास में, उसने बतशेबा के पति ऊरिय्याह को युद्ध से बुलवाया, इस आशा में कि वह अपने घर जाएगा और अपनी पत्नि के साथ संबंध करेगा। जब ऐसा नहीं हुआ, उसने योआब को आज्ञा दी कि ऊरिय्याह को सबसे घोर युद्ध के स्थान में भेजे और उसे छोड़कर पीछे हट जाए, जिससे उसकी मृत्यु निश्चित हो जाए (2 शमूएल 11:1-27)।

जब नातान नबी ने दाऊद के व्यभिचार और धोखेबाज़ी को उजागर किया (2 शमूएल 12:1-25), तो उसके सैनिकों ने अपने साथ विश्वासघात और निराशा अनुभव की होगी। दाऊद को इससे भी अधिक हानि अपने पुत्रों के साथ उसके संबंधों में हुई। बड़े होते समय उन्होंने अपने पिता के ढोंग और उसके सबसे विश्वासयोग्य साथी ऊरिय्याह की हत्या के कारण दूसरों के उपहास को सहन किया होगा। राजा के कुकृत्य का बोध निश्चय ही उसके जवान पुत्रों के लिए मानसिक तथा आत्मिक तौर पर हानिकारक रहा होगा। दाऊद के घोर पाप की जानकारी ने उसके प्रति उनके भरोसे को नष्ट किया।

3. दाऊद अपने बच्चों के मार्गदर्शन तथा अनुशासन में विशेष सम्मिलित नहीं था। उन्हें पूरा भरोसा था कि उनका पिता उनके किसी भी व्यवहार के लिए उन्हें न तो डाँटेगा और न ही दण्ड देगा। इस बात ने भी कुछ हद तक दाऊद की पुत्री तामार के उसके पुत्र अम्नोन द्वारा बलात्कार में योगदान दिया होगा। जब दाऊद ने इसके बारे में सुना तो वह क्रोधित तो हुआ, परन्तु उसने अम्नोन को अनुशासित करने के लिए कुछ भी नहीं किया (2 शमूएल 13:1-21)। इस बात का अबशालोम पर गहरा प्रभाव पड़ा। जब उसने देखा कि उसका पिता कोई कार्यवाही नहीं कर रहा है, उसने अपने भाई अम्नोन की हत्या करवा दी। स्वाभाविक था कि इससे दाऊद को बहुत दुःख पहुँचा; परन्तु एक बार फिर उसने कोई कार्यवाही नहीं की। वह अबशालोम को दण्ड देना नहीं चाहता था (2 शमूएल 13:20-39)।

4. इसके पश्चात, दाऊद की अपने बच्चों से संबंध की घटी और उनके ऊपर अभिभावकीय नियंत्रण की कमी उसकी प्रजा का उसके प्रति उदासीन होते जाने में प्रतिबिंबित होने लगी। जैसे जैसे समय बीतता गया, अबशालोम ने लोगों का हृदय जीत लिया। दाऊद का अधिकार इतना घट गया कि उसके पुत्र ने उसका सिंहासन हड़पने प्रयास किया (2 शमूएल 15:1-23)। यहाँ तक कि जब दाऊद ने अपने सेना के कुछ भाग को अबशालोम की सेना के विरुद्ध लड़ने के लिए एकत्रित किया, राजा ने तब भी उन्हें अबशालोम को कोई भी हानि पहुँचाने से मना लिया। दाऊद ने योआब और उसके आद्मियों को कड़े निर्देश दिए कि अबशालोम को कोई हानि न हो; लेकिन फिर भी उन्होंने उसे मार डाला, क्योंकि वे जानते थे कि जब तक अबशालोम जीवित रहेगा, राजा का जीवन खतरे में रहेगा (2 शमूएल 18:5-15; 19:1-7)।

5. दाऊद द्वारा अपने पुत्रों के ऊपर अभिभावक होने के अधिकार को त्याग देने का अन्तिम उदाहरण है अदोनिय्याह द्वारा इस्त्रएल के सिंहासन को हथिया

लेने का प्रयास। परमेश्वर ने दाऊद से कहा था कि उसके बाद सुलेमान राजा होगा (1 इतिहास 22:5-10); लेकिन सिंहासन के लिए अदोनिय्याह की लालसा इतनी अधिक थी कि उसने अपने आप को ऊँचा कर के कहा कि "मैं राजा होऊँगा" (1 राजा 1:5)। उसने अपने राज्याभिषेक की तैयारियाँ करनी आरंभ कर दीं। बाइबल का लेखक प्रगट करता है कि "उसके पिता ने तो जन्म से ले कर उसे कभी यह कहकर उदास न किया था कि 'तू ने ऐसा क्यों किया?'" (1 राजा 1:6)। अपने पिता का अनादर करते हुए, दाऊद की मृत्यु से पहले ही अदोनिय्याह ने योआब, एब्यातार, और पचास लोगों द्वारा अपने आप को राजा घोषित करवा दिया (1 राजा 1:5-7, 11-13, 25)। अन्ततः जब दाऊद को पता चला कि उसके पुत्र ने क्या किया है, तो उसने नातान और सादोक को आज्ञा दी कि वे उसके स्थान पर सुलेमान को राजा बनाएं (1 राजा 1:32-40)। दाऊद की मृत्यु के पश्चात, अदोनिय्याह की अन्तिम त्रासदी थी कि उसने दाऊद की देखभाल करने वाली अबिशग को अपनी पत्नि बना लेने के द्वारा राजगद्दी हथियाने का एक और प्रयास किया। अदोनिय्याह की कुटिल योजना को पहचानते हुए, सुलेमान ने अपने बड़े भाई को मार डालने का दुःखद आदेश दिया (1 राजा 2:13-25)।

कैसी त्रासदियाँ घरों और समाज में हो जाती हैं जब पिता अपने अभिभावक होने के कर्तव्य का पालन नहीं करते! कुछ अपने बच्चों के लिए अच्छा उदाहरण स्थापित नहीं करते; तो कुछ अन्य अपने अभिभावक होने के अधिकार को पूर्णतया तजने और उन पर नियंत्रण तथा अनुशासन न करने के द्वारा पाप करते हैं। इसी कारण बुद्धिमान व्यक्ति ने लिखा "जो बेटे पर छड़ी नहीं चलाता वह उसका बैरी है, परन्तु जो उस से प्रेम रखता, वह यत्न से उसको शिक्षा देता है" (नीति. 13:24)। क्योंकि इस संदर्भ में "बैरी" का तात्पर्य "कम प्रेम करने" से है (देखें 29:30-33), इसका यह निष्कर्ष है कि ऐसा पिता अपने पुत्र से इतना प्रेम नहीं रखता है कि उसे अनुशासित कर सके। एक लेख और यहाँ प्रासंगिक है: "छड़ी और डांट से बुद्धि प्राप्त होती है, परन्तु जो लड़का यों ही छोड़ा जाता है वह अपनी माता की लज्जा का कारण होता है" (नीति. 29:15; देखें इफि. 6:4; कुलु. 3:21)। कोई खण्ड हिंसक अनुशासन का अधिकार प्रदान नहीं करता है; वरन, पवित्रशास्त्र ऐसा अनुशासन चाहता है जो बच्चे के प्रति अभिभावक के प्रेम से निकले। प्रेम करने वाले अभिभावक बच्चों का प्रशिक्षिण तथा सुधार इस प्रकार करते हैं जिससे उनके चरित्र का निर्माण हो तथा बच्चों में यह समझ विकसित हो कि कुछ कार्य अस्वीकारीय एवं हानिकारक हैं, बच्चों तथा दूसरों, दोनों ही के लिए। बाइबल तथा व्यावाहरिक अनुभव द्वारा मिलने वाली एक शिक्षा है कि जो बच्चे प्रेम भरे अनुशासन के बिना बड़े होते हैं वे वास्तव में प्रेम रहित अनुभव करते हैं, और वे बहुधा अपने प्रति तथा अपने आस-पास के लोगों के प्रति क्रोध तथा चोट पहुँचाने वाले रवैये दिखाते हैं।

प्रतिशोध लेना (अध्याय 34)

परमेश्वर के लोगों को बुराई करने वालों से प्रतिशोध लेने के प्रलोभन से बच कर रहना चाहिए। दीना के बलात्कार के पश्चात, शकेम और उसका पिता हमोर, याकूब के डेरे पर आते हैं कि उसे और उसके बेटों को उसके भ्रष्ट किए जाने के लिए शांत और संतुष्ट कर सकें। हमोर ने परस्पर विवाह संबंध के द्वारा भाईचारे का प्रस्ताव रखा; इस नए संबंध में आस-पास के इलाके में और अधिक भूमि तथा चारागाहों की अनुमति सम्मिलित थी। अपने पिता के प्रस्ताव के अतिरिक्त, शकेम ने कहा कि उसकी बेटी से विवाह कर लेने के लिए वह वधु मूल्य चुकाने और जो भी विवाह के उपहार में याकूब माँगेगा वह सब देने को तैयार है। इन प्रस्तावों की उदारता के बावजूद, याकूब के बेटों ने उन्हें उस बुराई की भरपाई कर पाने के अपर्याप्त समझा जो शकेम ने उनकी बहिन के साथ की थी।

हमोर और शकेम ने जो प्रस्ताव रखे थे, वे सतह पर तो दोनों गुटों के लिए लाभदायक प्रतीत होते थे। लेकिन फिर भी याकूब के पुत्रों ने उन्हें छल से उत्तर दिया। शकेम के सभी पुरुषों के खतने की माँग करते हुए सामाजिक अपमान की उन्हें कोई परवाह नहीं थी। उनके विचार में तो प्रतिशोध था, और जैसा प्रतिशोध वे चाहते थे वह शकेम के अपराध से कहीं बढ़कर था।

"प्रतिशोध का कानून," जिसे लेक्स टेलिओनिस भी कहा जाता है, प्राचीन निकट पूर्व में प्रचलित था। यह हम्मूरबी की नियमावली (जो लगभग 1750 ई.पू. में लिखी गई) और मूसा की व्यवस्था, दोनों ही में मिलता है। इस कानून का एक प्रमुख बिंदु था "आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले दाँत" (निर्गमन 21:24; लैव्य. 24:20; व्यव. 19:21)।[22] आज यह सुनने में बर्बरतापूर्ण लगता है, परन्तु वास्तव में यह एक कदम था गैरकानूनी कार्यों के लिए और अधिक मानवोचित दण्ड देने की ओर। प्रभावी रूप से इसका अर्थ था कि दण्ड को अपराध के अनुपात में होना चाहिए, या दण्ड अपराध से बढ़कर भीषण नहीं हो सकता। उदाहरणस्वरूप, यदि समाज में समान स्तर के दो वयस्कियों में लड़ाई हो जाती है और एक के वार के कारण दूसरे की एक आँख की दृष्टि जाती रहती है, तो दोषी को जो अधिक से अधिक दण्ड दिया जा सकता था वह था कि उसकी एक आँख की दृष्टि ले ली जाए। उसके दण्डस्वरूप उसकी दोनों आँखें नहीं ली जा सकती थीं या फिर इससे बढ़कर कोई अन्य दण्ड उसे नहीं दिया जा सकता था।

शिमोन और लेवी का अपराध, शकेम द्वारा दीना को भ्रष्ट करने के अपराध के लिए उसे किसी न्यायालय से मिल सकने वाले दण्ड से कहीं बढ़कर था। एक मनुष्य के अपराध के लिए, याकूब के पुत्रों ने शकेम नगर के सारे पुरुषों को मार डाला, सारी स्त्रियों और बच्चों को दास बना लिया, और उनकी सारी संपत्ति, सारे मवेशी और झुण्ड चुरा लिए। यह पूरे समुदाय के विरुद्ध प्रतिशोध का कहा ना जा सकने वाला अपराध था, और दिखाता है कि क्रोधावेश में लिया गया प्रतिशोध कैसे नियंत्रण के बाहर हो सकता है। यीशु ने पहाड़ी उपदेश में ऐसे व्यवहार के विरुद्ध सचेत किया था (मत्ती 5:38-42)। क्रोध जंगल की आग के समान बढ़ और

फैल सकता है, प्रतिशोध में लोगों से वास्तविक या काल्पनिक शत्रुओं के विरुद्ध कल्पना से बाहर कार्य करवा सकता है।

पौलुस ने रोम के मसीहियों को लिखी पत्री में इस समस्या के बारे में लिखा:

> बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उन की चिन्ता किया करो। जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल-मिलाप रखो। हे प्रियो अपना बदला न लेना; परन्तु क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, "बदला लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा।" परन्तु "यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खाना खिला; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा।" बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई का जीत लो। (रोमियों 12:17-21)।

यह वह पाठ था जिसकी आवश्यकता स्वयं पौलुस को थी। कट्टर फ़रीसी होने के कारण, शाऊल (जैसा वह इब्रानी में जाना जाता था) सोचता था कि यीशु खतरनाक विधर्मी और यहूदी विश्वास के विरुद्ध बाग़ी है। वह मसीह के अनुयायियों को कैद करने और दण्ड देकर सताने यहाँ तक कि उनके लिए मृत्यु दण्ड का मत देने में बहुत उत्साही था। फिर शाऊल की भेंट दमिशक के मार्ग पर पुनरुत्थान हुए प्रभु के साथ हुई। बजाय उस ईश्वरीय प्रतिशोध के, जिसका वह भागी था, शाऊल को अनुग्रह, क्षमा और यीशु में परमेश्वर का सजीव प्रेम प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त, उसे जीवन का नया उद्देश्य मिला: मसीह (मसीहा) यीशु के लोहू में सारी मानवजाति के लिए क्षमा और उद्धार के सुसमाचार (अच्छा समाचार) के प्रचार का (प्रेरितों 26:9-18; रोमियों 1:16; 3:21-30; 6:1-7)। कई वर्ष के बाद पौलुस ने परमेश्वर के उस अनुग्रह (अयोग्य होने पर भी कृपादृष्टि) के बारे में लिखा जो उसे यीशु मसीह द्वारा प्राप्त हुआ था। पापियों का प्रधान - निंदा करने, सताने और हिंसक आक्रमण करने वाला - होने के कारण, पौलुस ने कहा कि उसे मसीह में प्रेम और क्षमा दोनों ही प्राप्त हुई। मसीहियों की इतनी हानि करने बावजूद, अपने प्रकोप को उस पर उँडेलने की बजाय, परमेश्वर ने न केवल उसे क्षमा कर दिया परन्तु उसे सुसमाचार प्रचार करने की ज़िम्मेदारी या "सेवकाई" (διακονία, *डियाकोनिया;* 1 तिमु. 1:12-16) भी सुपुर्द की।

यीशु, निःसन्देह, दया के सिद्ध उदाहरण थे। उन्होंने बहुधा दया के बारे में बात की और अपने जीवन में उसका व्यवहार भी किया। अन्यायपूर्वक उपहास उड़ाए जाने, कोड़ों से पीटे जाने, काँटों का ताज पहनाए जाने, और क्रूस पर ठोके जाने के बावजूद उन्होंने अपने वध करने वालों को ना तो कोई श्राप दिया और ना ही उनके विरुद्ध परमेश्वर के प्रकोप की माँग की; इसके विपरीत, उन्होंने प्रार्थना की, "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहें हैं" (लूका 23:34)। उनकी इस प्रार्थना का उन लोगों पर जो उनके मारे जाने के गवाह थे बहुत गहरा प्रभाव हुआ, विशेषकर उन्हें क्रूस पर चढ़ाने की देख-रेख करने वाले उस रोमी सूबेदार पर। वह जानता था कि यीशु के मुकदमे के समय

कई बार पुन्तियुस पीलातुस ने उसे प्रत्येक अपराध से निर्दोष करार दिया था; लेकिन फिर भी हाकिम ने यहूदियों के दबाव में आकर उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने दिया। यह सैनिक अनेकों लोगों की मृत्यु का गवाह रहा था, परन्तु उसने कभी किसी को अपने प्राण लेने वालों के लिए होंठों पर प्रार्थना के साथ मरते हुए नहीं देखा था। भौंचक्का होकर प्रशंसा करते हुए उस सूबेदार ने कहा, "सचमुच यह मनुष्य, परमेश्वर का पुत्र था" (मरकुस 15:39)।

याकूब के पुत्रों ने वैसी दया और क्षमा कभी नहीं देखी थी जैसी यीशु ने क्रूस पर दिखाई। उस विधर्मी संसार में जीते हुए वे केवल घृणा से भरे प्रतिशोध और प्रतिक्रिया को ही जानते थे। इसलिए उन्होंने शरीर की माँग - "डाह, हत्या, झगड़े, छल, और बुराई" (रोमियों 1:29) - को शकेम के सारे पुरुषों को मार कर तथा उनकी सारी संपदा और मवेशियों को लूट कर पूरा किया।

समाप्ति नोट्स

[1]अर्थात, याकूब लिआः से राहेल के मुकाबले कम प्रेम करता था (29:30-32)। [2]बिन्यामीन, याकूब के बारहवें पुत्र का जन्म अभी तक नहीं हुआ था (35:16-18)। [3]कुछ अनुमान और साहित्यक विशलेषण के द्वारा, ब्रूस के. वॉल्टके ने इस घटना के समय दीना की आयु पंद्रह वर्ष होने का अनुमान लगाया है। (ब्रूस के. वॉल्टके, *जेनिसिसः ए कॉमेन्ट्री* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः ज़ोन्डरवैन पबलिशर्स, 2001], 459.) [4]*रआह* के ऐसे ही अन्य प्रयोग के लिए देखें निर्गमन 2:11. [5]नाम "शकेम," जिसका अर्थ है "कंधा," संभवतः नगर के गिराज़िम पहाड़ और एबाल पहाड़ के मध्य स्थित होने के कारण दिया गया। [6]लिओनार्ड जे. कोप्स, "שָׁכֶם," *TWOT* में, 2:682 में। [7]संभव है कि यौन दुराचार संबंधित कुछ खण्डों में क्रिया *'अनाह* केवल अपमान (निरादर) का सूचक हो, कुछ अन्य में स्पष्टतः इसका तात्पर्य बलात्कार से है (व्यव. 22:28, 29; न्यायियों 19:24; 20:5; 2 शमूएल 13:12, 14, 22, 32; विलाप. 5:11)। [8]जौन टी. विलिस, *जेनिसिस*, द लिविंग वर्ड कॉमेन्ट्री (ऑस्टिन, टेक्स.: स्वीट पबलिशिंग कम्पनी, 1979), 365. [9]"दिला दे" लकाच से है, जो 34:2 में "ले लेने" या "पकड़ लेने" (NRSV) को आधार देने वाला शब्द है। विडंबना यह है कि शकेम पहले ही दीना को "ले" चुका था। [10]इससे मिलते जुलते नियम प्राचीन निकट पूर्व के अन्य वैधानिक लेखों में पाए जाते हैं। उदाहरणस्वरूप, देखें थियोफाइल जे. मीक, ट्रांस., "द मिड्डल अस्सीरियन लौस," इन *एंशियंट नियर ईस्टर्न टेक्सट्स रिलेटिंग टू द ओल्ड टेस्टामेन्ट*, तीसरा संस्करण, एडिटर जेम्स बी प्रिट्चर्ड (प्रिंस्टन, एन.जे.: प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1969), 185 (नोस. ए. 55, 56)।

[11]इसकी तुलना में जब याकूब को लगा कि यूसुफ़ का देहांत हो गया है, उसने "अपने कपड़े फाड़े," "कमर पर टाट लपेटा," "अपने पुत्र के लिए बहुत दिनों तक विलाप करता रहा," और "उसके लिए रोता ही रहा" (37:34, 35)। [12]एच. सी. लियुपोल्ड, *एक्स्पोज़िशन ओफ़ जेनिसिस*, वोल. 2 (एन. पी.: वार्टबर्ग प्रेस, 1942; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1953), 901.[13]याकूब पहले ही नगर के बाहर भूमि का भाग खरीद कर चुका था (33:19), परन्तु शकेम निवासियों के साथ संधि उसके तथा उसके पुत्रों को और भी भूमि के स्वामी होने के अवसर प्रदान करती। [14]शब्द *मोहर* दो अन्य स्थानों में भी आता है (निर्गमन 22:16; 1 शमूएल 18:25)। ESV इसका अनुवाद लगातार "वधु मूल्य" करती है। [15]दोनों संज्ञाएं *मोहर* और *"मथ्थान"* हेंडियाडिस कहलाए जाने वाली भाषा के अलंकारिक प्रयोग को दिखाती हैं, जिसमें एक ही उपहार को दो भिन्न विधियों से कहा गया है। (ई. ए. स्पाईज़र, *जेनिसिस*, द ऐंकर बाइबल, वोल. 1 [गार्डन सिटी, एन.वाय.: डबलडे & कम्पनी, 1964], 265.) अधिक संभावना यही है कि दो भिन्न उपहार दिए

गए। अब्राहम के सेवक ने रिबका और उसके भाई और उसकी माता को अनेकों उपहार दिए (24:53)। [16]गॉर्डन जे. वेन्हैम, *जेनिसिस 16-50*, वर्ड बिबलिक्ल कॉमेन्ट्री, वोल. 2 (डैलस: वर्ड बुक्स, 1994), 314. [17]स्पाईसर, 265. [18]"टारगम ऑफ ओंकेलोस," *द टार्गम्स ऑफ ओंकेलोस एन्ड जोनाथन बेन उज़्ज़िएल ऑन द पेंटाट्यूक* में, ट्रांस. जे. डब्लयू. ईथरिज (न्यू यॉर्क: केटीएवी पबलिशिंग हाउस, 1968), 113. [19]यदि दीना शकेम के घर में बन्दी थी तो यह स्पष्ट कर सकता है (लेकिन न्यायसंगत नहीं ठहरा सकता) कि क्यों याकूब के भाईयों ने "छल" (34:13) तथा हिंसा (34:25, 26) से कार्य किया। क्योंकि नगर के लोगों की संख्या उन से बहुत अधिक थी, उन्हें लगा कि छल ही उनकी बहिन को वापस प्राप्त कर लेने को निश्चित कर सकता है। [20]केनेथ ए. मैथ्यूस, *जेनिसिस 11:27-50:26*, द न्यू अमेरिकन कॉमेन्ट्री, वोल. 1b (नैशविले: ब्रॉडमैन & होलमैन पबलिशर्स, 2005), 609.

[21]विक्टर पी. हैमिलटन, *द बुक ऑफ जेनिसिस: चैप्टर्स 18-50*, द न्यू इंटरनैशनल कॉमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेन्ट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैन्स पबलिशिंग कम्पनी, 1995), 371. [22]देखें *द कोड ऑफ हम्मूरबी* 196, 200.